III

Date ___/___/___

# सम्भववादी एवं नवनियतिवादी

## सम्भववाद

पर्यावरणवाद या नियतिवाद के चलते भूगोलवेत्ताओं ने यह अनुभव किया कि मानव की क्षमता एवं महत्ता को नकारा जा रहा है उसे एक निराश्रित एवं प्रकृति के हाथ खिलौना माना जा रहा है जबकि वह अपने ज्ञान क्षमता तकनीकी के आधार पर पर्यावरण को अपनी इच्छानुसार उपयोग मे ले रहा है।

सम्भववाद के नाम से जाना जाता है। इसमे मानव का उसका यथोचित स्थान प्रदान किया गया है तथा प्राकृति को उसका सहायक स्वीकार किया गया है जो भौगोलिक सर्यीत (पर्यावरण) के उपरान्त भी भिन्न व्यवहार का चयन करता है।

सम्भववाद विचारधारा के प्रथम प्रणेता फ्रांसीसी विद्वानो फेब्वरे थे यद्यपि इसे वास्तविक स्वरूप फ्रांस के ही प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता वाइडल डी ला ब्लाश ने दिया तदुपरान्त जीस ब्रुस बोमेन कार्ल सावर आदि अनेक विद्वानों ने इस विचारधारा की पुष्टि किया फब्वरे ने मानव को एक भौगोलिक तत्व या एजेन्ट स्वीकार किया। अन्य तत्व जैसे जलवायु वनस्पति मृदा आदि होते है। वह किसी से कम नही तथा वह अपनी अवश्यकतानुसार विभिन्न परिवर्तनो का जन्म देता है।

सम्भववादी विचारधारा के जनक फ्रांस के भूगोलवेत्ता वाइडल डी ला ब्लॉश को माना जाता है। उनके अनुसार प्राकृति मात्र एक मार्गदर्शन या सलाहकार के रूप मे है। भौगोलिक तत्वो मे पर्यावरण के तत्वों का सिमित अस्तित्व है।

जैसे ही उनका मानव से सामन्जय किया जाता है
ब्लाश ने मानव की शक्ति ज्ञान बौद्धिकता को प्रयाप्त महत्व देते हुए
बोमेन के अनुसार भौगोलिक अध्ययन ने सम्भववाद की जड़े अत्याधिक गहराई तक है। उनके अनुसार जैसे जैसे ज्ञान और विज्ञान का विकास और विस्तार होता जाता है अपितु उनके उपयोग का स्वरुप भी परिवर्तित हो जाता है।
कार्ल सावर ने भी मानव की क्षमता का प्रतिपादन करते हुए सम्भववादी विचार धारा को विकास मे योग दिया
ब्लांश के शिष्य जीन ब्रुन्स ने सम्भववाद की विचारधारा को आगे बढाया तथा इसकी विशद व्याख्या की। परिवर्तन प्राकृतिक का नियम है और संसार की प्रत्येक वस्तु चाहे वह भौतिक हो या सांस्कृतिक परिवर्तनशील रहती है तो वह उन्हे अपने योग्य बना लेता है। भूतल पर मानव के लिए प्रत्येक चीज एक आदत की बात है। जो भौतिक तत्वो की गहन जानकारी और उनका तत्वो कि कुशलतापुर्वक अनुकुलन द्वारा प्राप्त होती है
मानव क्षमता को महत्व दिया तथा पर्यावरण को एक अनुज्ञात्मक अवरोधक और सीमाकारी शक्ति माना किन्तु उसे नियन्त्रणकारी नही
विद्वानो ने अतिरिक्त डिमान्जिया ब्लैन्चार्ड हेनट्र किर्चाँफ आदि ने भी मानव को सर्वोपरि स्वीकार करते हुए सम्भववाद की विचार धारा को पुष्ट किया।

प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय

Date __/__/__

संक्षेप मे सम्भववाद नियतिवाद के विपरित विकसित होने विचार धारा थी। जिसमे मानव की पर्यावरण से सर्वोच्च वर्णित किया गया। वर्तमान समय मे नियतिवाद को स्वीकार नही किया जाता। मानव कि क्रियाओ-उसकी क्षमता को महत्व देते है। स्वंय फैब्वरे ने स्वीकार किया है। मानव चाहे जिस रुप मे प्रयास कर रहे हो वह प्रकृतिक परिवेश से स्वतंत्र नही हो पाता वर्तमान युग मे जब कि अत्याधिक प्रगति हो गई है आज विश्व के अनेक भाग मानव रहित इसलिए है। वहा कृषि नही हो सकती उद्योग स्थापित नही हो सकता आज भूखे और बाढ से हजारो ही नही लाखो की मृत्यु हो जाती है। भूकम्प का एक झटका तथा ज्वालामुखी का विस्फोट तबाही मचा देती है।

## नव-नियतिवाद (~~निश्च~~ निश्चयवाद)

नव निश्चयवाद या आधुनिक-नियतिवाद का नाम दिया गया। ग्रिफिथ टेलर जो इस विचार के प्रारम्भिक प्रणेता थे उन्होने इसे रुको एव जाओ नियतिवाद तथा स्पेट ने इसको क्रियात्मक सम्भववाद का नाम दिया। इसे किसी भी नाम से पुकारा जाय इसका उद्देश्य पूर्व विकसित दोनो विचारधाराओ के मध्य समन्वय करना है। टेलर ने इसकी व्याख्या करते हुये वर्णित किया कि वास्तव मे नतो प्रकृति का मानव पर पूरा नियन्त्रण है। दोनो एक दुसरे के क्रियात्मक सम्बन्ध है। वह प्रकृति से सहयोग प्राप्त करे मानव एक देश के विकास को तेज कर सकता है। मंद कर सकता है। या रोक सकता है। उन्होने इसकी तुलना एक ट्रैफिक नियंत्रण से की जो गति को रोक सकता है। उसकी दिशा को नही बदल सकता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया
20/09/20

Page No.